Dr. Sangita Kumari Saha
B.A D-II (H) IVth Paper.

Contribution of Rollo May, (1909)

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान व्यवहारवादी मनोविज्ञान द्वारा प्रतिपादित उस विचार धारा का विरोध करता है जिसने मानव प्रकृति को समझने के लिए पशुओं के प्रयोगों पर अधिक बल डाला गया था। अस्तित्ववादी मनोविज्ञानियों द्वारा मनुष्यों की प्रकृति को समझने के लिए एक नया दृष्टिकोण अपनाया गया। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में कुछ ऐसे पहलुओं पर जोर डाला गया जिसके द्वारा मानव प्रकृति की सार्थकता और सम्पूर्णता को जिनमें व्यक्ति का वास्तविक अस्तित्व होता है।

Contribution of Rollo May (1909)

रोलो मे का जन्म Ohio में 1909 में हुआ उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि कोलम्बिया विश्वविद्यालय से प्राप्त किया। ये पहले American psychologists हैं जिन्होंने अस्तित्ववादी मनोविज्ञान जो उनके यूरोपीय सहकर्मी का मुख्य देन था। उनको समर्थन प्रदान किया। उनके अपने यूरोपीय सहकर्मी Binswanger and Boss के समान ये भी मनश्चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किये। इन पुस्तकों में तीन विशेष रूप से उल्लेखनीय है

→ Existential Psychology (1969), Love and will (1969)
Man's Search for Himself 1953).

अन्य अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिकों के समान वे मनुष्यों के अस्तित्ववादी दुनिया में जुड़े रहने की आवश्यकता पर बल डालते हैं चूंकि मनुष्य अपने वातावरण से अलग नहीं हो सकता है इसलिए दोनों के बीच एक स्वतः सम्बन्ध Stimultaneous relationship होता है जिसमें अस्तित्व के तीन modes मुख्य होते हैं - भौतिक एवं दैहिक, अन्य लोगों का सामाजिक वातावरण तथा उसके भीतरी स्वभाव के साथ उसका अपना सम्बन्ध 'Being in the world' का संप्रत्यय द्वारा इस तथ्य पर बल डाला जाता है कि व्यक्ति किस तरह के अस्तित्व को अपनाएगा। इसे चुनने का उत्तरदायित्व स्वयं व्यक्ति पर होता है और वह उस दुनिया के लोगों से मांगों को पूरा करने के लिए किये जाने वाले कार्यों के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।

Scanned with CamScanner

प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व की समाप्ति का अन्दाज होता है और इस अन्दाज से उसे चिन्ता उत्पन्न होता है अगर कोई व्यक्ति अपने मूल अन्तः शक्ति को पूरा करने में असमर्थ रहता है तो उसे उसमें दोष भाव उत्पन्न होता है। मे ने व्यक्ति के भीतर दो तरह के संवेगों की पहचान किया है — चिन्ता एवं दोष-भाव।

इन संवेगों पर बल डालने के अतिरिक्त May ने व्यक्ति की इच्छा प्रदर्शित करने की क्षमता की पहचान करके व्यक्ति के धनात्मक पहलू पर बल डाला है। इसमें विभिन्न सम्भावनाओं में से उत्तम संभावना का चयन करने की इच्छा शक्ति भी सम्मिलित होती है। उनके इस धनात्मक पहलू का एक मुख्य पहलू प्यार या स्नेह है जिसके उन्होंने चार तत्व बतलाया है — यौन, इरोस अर्थात महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क स्थापित करने की क्षमता, फिलिया दूसरों के कल्याण के लिए चिंतित रहना तथा Agape सबों के साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्ध के लिए चिन्ता।

कुछ आलोचकों का मत है कि अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में मनोविज्ञान की दार्शनिक अनुमान तथा ईश्वरपरक अन्दाज के अधिकांश के रूप में है जो मनोविज्ञान के वैज्ञानिक एवं प्रयोगात्मक स्वरूप के विरुद्ध है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में वस्तुनिष्ठ विधि तथा नियम की कमी है।

इन आलोचनाओं के बावजूद अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के योगदान को महत्वपूर्ण माना गया है तथा इसके सिद्धान्त प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के लिए एक चुनौती पूर्ण रहा है।